भूमिका

तमाम बहसों और विवादों के बावजूद हिन्दी नवजागरण की अवधारणा को अभी तक सर्वमान्य स्वीकृति नहीं मिली है। भारतीय नवजागरण की शुरूआत के संकेत काफी पहले से मिल जाते हैं। 19वीं सदी के जागरण काल में पराधीन भारतीय समाज में एक चेतना आई थी। यह चेतना नवीन नहीं थी। प्राचीन काल से ही भारत में विभिन्न धर्म और संस्कृतियाँ आती-जाती रही है। विभिन्न संस्कृतियों के समन्वय से चेतना आई है। रामधारी सिंह दिनकर ने 'संस्कृति के चार अध्याय' में लिखा है:- ''भारतीय संस्कृति में चार बड़ी क्रान्तियाँ हुई। पहली क्रान्ति आर्यों के आने से हुई, दूसरी क्रान्ति तब हुई जब गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने धर्म के विरूद्ध विद्रोह छेड़ा। तीसरी क्रान्ति इस्लाम के आने से हुई और चौथी क्रान्ति यूरोपीय शासकों के आने से हुई।''

भारतीय नवजागरण को नई अवस्थाओं से गुजरना पड़ा है। भारतीय नवजागरण बंगाल से आरम्भ होता हुआ, महाराष्ट्र की सीमाओं को छूता हुआ, दक्षिण के माध्यम से उत्तर में प्रवेश करता है। भक्ति आन्दोलन जिसे लोकजागरण कहा जाता है, नवजागरण का मुख्य अंग है। भक्ति आन्दोलन सांस्कृतिक उत्थान था। लोकभाषाएं अस्तित्व में आ चुकी थी। कला के क्षेत्र में नए परिवर्तन हो रहे थे। दक्षिण में ब्राह्मण विरोध चल रहा था। मंदिरों में शूद्रों के प्रवेश को लेकर आन्दोलन हो रहे थे। इसके लिए आवश्यकता थी, अंग्रेजी भाषा के ज्ञान की। अंग्रेजी भाषा के ज्ञान द्वारा बुद्धिजीवियों ने अपनी और विदेशी संस्कृति की तुलना की। विदेशी संस्कृति के सकारात्मक प्रभाव ग्रहण करने की वकालत की और इस दिशा में कार्य करना आरम्भ किए। ब्रहा समाज, आर्य समाज, प्रार्थना सभा, थियोसोफिकल सोसाइटी आदि संस्थाओं ने समाज सुधार की दिशा में आंदोलन छेड़ा।

भारतीय नवजागरण की अनेक विवादास्पद स्थापनाओं में एक स्थापना हिन्दी नवजागरण की रही है। बहुत से विचारकों और चिंतकों का मानना है कि हिन्दी

नवजागरण जैसी कोई अवधारणा का कोई महत्व नहीं है और न ही अवधारणा भारतीय नवजागरण से जुड़ी है। सर्वप्रथम डॉ. रामविलास शर्मा ने 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' में हिन्दी नवजागरण की व्यापक अवधारणा प्रस्तुत की है। हिन्दी नवजागरण को हिन्दी प्रदेश से जोड़ा और हिन्दी प्रदेश को 1857 की क्रान्ति से। हिन्दी नवजागरण का केन्द्र उन्होंने 1857 के विद्रोह को माना है। उन्होंने हिन्दी नवजागरण को चार चरणों में विभक्त किया है पहला 1857 का विद्रोह, दूसरा भारतेन्दु युग, तीसरा महावीर प्रसाद द्विवेदी युग और चौथा निराला का युग और उनके बाद का साहित्य। 1857 के विद्रोह को नवजागरण का केन्द्र मानने का मुख्य कारण यह था कि इस विद्रोह का प्रभाव समाज, साहित्य, संस्कृति, आचार-विचार, राजनीति, विदेश नीति आदि पर जितना पड़ा उतना अन्य विद्रोहों का नहीं। भारतीय नवजागरण का स्वरूप जहाँ बंगाल में बुद्धिवाद के रूप में दिखाई देता हैं, वहीं महाराष्ट्र में सुधारवाद के रूप में, दक्षिण में जहाँ ब्राह्मण विरोध होता है, वहीं हिन्दी पट्टी में इसका राष्ट्रीय स्वरूप निर्धारित होता है। नवजागरण को सिर्फ सुधारवादी परम्परा से जोड़ कर न देखा जाए, नवजागरण जातीय निर्माण से भी जुड़ा है। यह जातीय निर्माण हिन्दी प्रदेश के नवजागरण में दिखाई पड़ता है। इसकी सामंत विरोधी दृष्टि इसकी मुख्य विशेषता रही है। 1857 के विद्रोह का असर भारतेन्दु युगीन साहित्य पर प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। इसीलिए नवजागरण और आधुनिकता का मिश्रण हम भारतेन्दु युगीन और उनके बाद वाले साहित्य में पाते है। नई भाषा, नया विषय, नई विधाएं और नया उत्साह इस युग के साहित्य में दिखाई देता है। अंग्रेजों की शक्ति और विरोध का मिला-जुला स्वरूप आधुनिक काल के आगमन के साथ आरम्भ हो जाता है। भारतेन्दु को अपना आदर्श मानते हुए प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, राधाचरण गोस्वामी, प्रेमधन और बालमुकुंद गुप्त जैसे लेखकों ने नवजागरण की धारा को तीव्रता से आगे बढ़ाया। परन्तु वर्तमान में हिन्दी नवजागरण से सम्बन्धित लेखकों की रचनाओं की सम्पूर्ण सामग्री प्रकाश में नहीं

आने से विवाद लम्बे चले आ रहे है। नवजागरण से सम्बन्धित सामाजिक, ऐतिहासिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य का मानचित्र स्पष्ट रूप से उभर कर सामने नहीं आया है। जिससे हिन्दी नवजागरण पर वाद-विवाद बढ़ते चले जा रहे हैं। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य पर सही मूल्याकंन होने पर भी हिन्दी नवजागरण का वास्तविक स्वरूप सामने आएगा। नवजागरण कालीन आधी से भी अधिक सामग्री दुर्लभ पत्र-पत्रिकाओं में दबी पड़ी है, जिन्हें खोज कर निकालने पर ही हिन्दी नवजागरण का उजला रूप हमारे सामने आएगा।

हिन्दी नवजागरण की एक ऐसी कड़ी के रूप में बालमुकुंद गुप्त का नाम लिया जाता है। भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग की संधि बेला में कार्य करने वाले गुप्त जी की रचनाएं दो युगों का प्रतिनिधित्व करती हैं। जितनी सच्चाई इनकी पत्रकारिता में थी, उतना ही उत्साह इनकी रचनाओं में पाया जाता है। निर्भीकता, स्पष्टवादिता और स्वाभिमानता उनके व्यक्तित्व के मुख्य गुण थे। जो बात उनके दिल में रहती थी, वही कलम से भी निकलती थी। आरम्भ से ही 'उर्दू' में 'शाद' उपनाम से कविता करते थे। उर्दू के प्रतिष्ठित अखबारों में कार्य करने के पश्चात हिन्दी की तरफ आकर्षित हुए। हिन्दी और नागरी के महत्व को स्वयं समझा और अपनी रचनाओं के माध्यम से दूसरों को भी समझाया। दर्जनों लेख, आलोचनाएँ और निबंध हिन्दी भाषा के समर्थन में लिखी। परन्तु विशेष बात यह रही कि इन्होंने कभी भी उर्दू अथवा मुसलमानों का विरोध नहीं किया। हिन्दी और उर्दू को गुप्त जी सगी बहने कहा करते थे। स्वयं कट्टर सनातन हिन्दू धर्मी थे, परन्तु अन्यों धर्मो का विरोध और अपने धर्म का अंध समर्थन कभी भी नहीं किया।

इनकी रचनाओं में एक ही भाव झलकता है। साम्राज्यवाद का तीखा विरोध और मानवता के प्रति संवेदना। हिन्दी के जिस जातीय स्वरूप की संकल्पना डॉ. राम विलास शर्मा ने की है, वह इनकी भाषा में दिखाई पड़ती है। 'शिवशंभु के चिट्ठों' के

माध्यम से इनकी अंग्रेजी राज की बखियां उधेड़ी थी, जिसकी गूंज आज भी सुनाई देती है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ हुआ 'अनिस्थरता विवाद' और 'वेकंटेश्वर समाचार' के संपादक हुआ 'शेष विवाद' गुप्त जी की निर्भीकता एवं विलक्षण प्रतिभा को दर्शाता है। आज हम जिस हिन्दी भाषा का आधुनिक स्वरूप पाते हैं, उसकी आरम्भिक रूप हमे गुप्त जी की भाषा में दिखाई देता है। सीधी, सरल, विनोदप्रिय, मुहावरेदार, उर्दू-फारसी के सरल शब्दों से मिश्रित भाषा का आविष्कार करने का श्रेय गुप्त जी को जाता है। गुप्त जी के इसी महत्व को रेखांकित करने के लिए यह शोध कार्य किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य पाँच अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय 'नवजागरण की अवधारणा' में नवजागरण का अर्थ, व्युत्पत्ति और परिभाषा दी गई है। यूरोपीय नवजागरण का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, भारतीय नवजागरण के संदर्भ में समझाया गया है। यूरोपीय पुनजागरण किन परिस्थितियों में आया और भारतीय नवजागरण से उसके बुनियादी अंतर क्या है? दोनों की सामाजिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में क्या समानताएँ और असमानताएँ रही है। इन तत्वों पर प्रकाश डाला गया है। भारत में नवजागरण का विकास किन परिस्थितियों में हुआ, कैसे नवजागरण लोकजागरण से गुजरता हुआ, 1857 की क्रान्ति के प्रभाव ग्रहण करता हुआ, भारतेन्दु युग तक जा पहुँचता है और द्विवेदी युग में कैसे उसका विकास होता है? भारतीय नवजागरण की भूमिका में कुछ प्रेरक तत्वों की भूमिका रही है जैसे- अंग्रेजों का आगमन, ईसाई मिश्नरियों की स्थापना, प्रेस और पत्रकारिता का उद्‌भव, पाश्चात्य विद्वानों द्वारा अनुवाद कार्य सुधारवादी आन्दोलन, 1857 का विद्रोह ओर मुस्लिम नवजागरण। इन तत्वों पर प्रकाश इस अध्याय में डाला गया है। अंत में हिन्दी नवजागरण और उसका 1857 की क्रान्ति, भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग से उसका सम्बन्ध दिखाया गया है।

दूसरा अध्याय 'हिन्दी नवजागरण और भारतेन्दु युग' चार भागों में विभक्त है। प्रेस, पत्रकारिता, नया पाठक वर्ग और हिन्दी समाज पर प्रभाव। प्रेस और पत्रकारिता का नवजागरण में मुख्य स्थान रहा है। नवजागरण और पत्रकारिता एक-दूसरे के पूरक है। प्रेस की स्थापना में जिन कारकों की भूमिका रही जैसे पुर्तगाली, फ्रांसीसी और अंग्रेज। इस अध्याय में इनकी चर्चा की गई है। प्रेस की स्थापना भारत में कैसे हुई? हिके गजट ने प्रेस को प्रचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। पत्रकारिता के प्रारम्भ में उसकी चर्चा विस्तार से की गई है। अंग्रेजी पत्रकारिता के बाद देशी, फिर हिन्दी पत्रों का विकास होने लगा। 1850 के बाद की पत्रकारिता में नयी चेतना आने लगी थी। पत्रकारिता के स्वरूप में परिवर्तन आने लगा था। अंग्रेजों का पत्रों पर विभिन्न एक्ट लगाना, फिर भी पत्रकारिता ने नवजागरण की गति को तीव्रता दी। हिन्दी के माध्यम से एक नया पाठक वर्ग तैयार हो रहा था, जो स्वदेशी संस्कृति को बचाने के लिए तैयार था। हिन्दी के माध्यम से नई जातीय संस्कृति का विकास हो रहा था, जोकि सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के लिए प्रयासरत थी। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के योगदान की चर्चा इस अध्याय में की गई है।

तीसरा अध्याय 'बालमुकुंद गुप्तः व्यक्तित्व और प्रतिरोध का स्वर' बालमुकुंद गुप्त के जीवन वृत और नवजागरण से उनके सम्बन्ध को दर्शाता है। हिन्दी नवजागरण और बालमुकुन्द गुप्त का सम्बन्ध किन अवस्थाओं में हुआ है? उनकी किन विशेषताओं के कारण उनका नाम नवजागरण के निर्माताओं में आता है? यह अध्याय चार भागों में विभक्त है। बालमुकुन्द गुप्तः एक परिचय, शिवशंभु के चिट्ठे में जातीय चेतना, भारत मित्र में सामाजिक जागरण और भाषा चिंतनः अनास्थिरता विवाद। 'शिवशंभु के चिट्ठे' और 'भारतमित्र' दोनों ही गुप्त जी की ख्याति का आधार रहे है। 'शिवशंभु के चिट्ठे' में जिस जातीय चेतना की अभिव्यक्ति हुई है, वह मुख्यतः साम्राज्यवाद विरोधी है। और साम्राज्यवाद विरोध नवजागरण का एक पहलू है। सामाजिक सुधार भी नवजागरण की परिधि में आते हैं। समाचार पत्र एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा यह

चेतना सम्पूर्ण समाज तक पहुँचती है। भारतमित्र ने सामाजिक सुधार जो कार्य किए थे, उनका वर्णन इस अध्याय में है। भाषा हमारी सामाजिक संस्कृति का अंग रही है। भाषा सम्बन्धी जागरण को भी इसी परिधि में लाया गया है। जिन विवादों के कारण गुप्त जी और भारतमित्र को ख्याति मिली थी, उनमें से एक 'अनस्थिरता विवाद' भी रहा है। महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे युग प्रवर्तकों से टक्कर लेने का साहस हर किसी के बस में नहीं था। परन्तु गुप्त जी अंत तक अपनी बात पर कायम रहे और 'आत्माराम' के नाम से कई लेख लिखकर 'द्विवेदी जी' को उत्तर दिया। इस चर्चा-परिचर्चा में बहुत से विद्वानों ने भाग लिया। हिन्दी के इस ऐतिहासिक विवाद ने बहुत सी भ्रांतियों को दूर किया। गुप्त जी की विलक्षण प्रतिभा का लोहा उस युग के अन्य विद्वानों ने भी माना था।

चतुर्थ अध्याय 'हिन्दी नवजागरण में बालमुकुंद गुप्त का योगदान' गुप्त जी के साहित्य का महत्व प्रतिपादित करता है। स्वाधीनता की चेतना, अंग्रेजी राज की आलोचना हिन्दी की जातीय चेतना के निर्माण में योगदान, हिन्दी गद्य का निर्माण और हिन्दी का आलोचनात्मक विवेक इस अध्याय के मुख्य पहलू है। गुप्त जी के साहित्य का विभिन्न दृष्टिकोणों से अवलोकन किया गया है। गुप्त जी की रचनाओं में विदेशी शासन के प्रति आक्रोश था। स्वाधीनता का भाव उनमें विधमान था। यह स्वाधीनता की चेतना उनके साहित्य में भी परिलक्षित होती है। विदेशी शासन को उखाड़ने का भाव और एक जुट होकर अंग्रेजों का विरोध, यह परिणिती गुप्त जी की रचनाओं में पाई जाती है। विभिन्न कविताओं, निबन्धों, लोकगीतों और चरित लेखों के माध्यम उनका यह विरोध स्पष्ट झलकता है। हिन्दी की जिस जातीय चेतना के निर्माण की बात रामविलास शर्मा करते हैं, वह हमें गुप्त की रचनाओं में दिखाई देती है। हिन्दी और उर्दू की एकता, हिन्दी को सरल-सुगम बनाने के लिए और नागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि बनाने के लिए वे कितने प्रयत्नशील थे, यह उनकी हिन्दी और नागरी सम्बन्धी लेखों में देखने को मिलता है। 'हिन्दी भाषा का इतिहास' लिखने का प्रयास उन्होंने

किया, परन्तु उनकी मृत्यु के कारण यह पुस्तक पूरी नहीं हो चुकी। गुप्त जी की आलोचनात्मक रचनाओं को पढ़ने से आलोचना के सिद्धान्तों का ज्ञान होता है। मित्र अथवा शत्रु दोनों की कृतियों में बिना किसी पूर्वाग्रह से ग्रस्त हुए बिना उन्होंने अपने आलोचनात्मक विवेक का परिचय दिया है।

पंचम अध्याय 'बालमुकुंद की कविताई एवं अन्य लेखन' तीन भागों में विभक्त है। पहला भाग बालमुकुंद गुप्त का काव्य, दूसरा भाग 'संपादित एवं अनूदित रचनाएँ और तीसरा भाग 'चरित चर्चा एवं इतिहास दृष्टि' है। बालमुकुंद गुप्त को प्रायः एक पत्रकार एवं निबंधकार के रूप में जाना जाता है, परन्तु उनकी कविताओं की चर्चा नहीं होती। परन्तु उनके काव्य को पढ़ने के पश्चात ज्ञान हुआ उसमें युगानुसार नवीनता है। जीवन संघर्ष और समकालीन परिस्थितियाँ तो साथ-साथ चल रही थी शिल्प की दृष्टि से नए प्रयोग हो रहे थे। गुप्त जी स्वयं अपनी कविताओं को तुकबन्दी कहा करते थे। 'अनुवाद एवं संपादन कार्य' में उन पुस्तकों का ब्यौरा है जो गुप्त जी ने विभिन्न भाषाओं जैसे बांग्ला, उर्दू संस्कृत आदि से अनुवादित की थी। संपादित और मौलिक पुस्तकों में रास पंचाध्यायी और भंवर गीत, हरिदास, खिलौना, खेल-तमाशा, सर्पाधान चिकित्सा, हिन्दी भाषा, शिवशंभु के चिट्ठे, चिटठे और खत, रत्नावली नाटिका आदि आती है। मडेलभगिनी, सती प्रताप और जहाँगीरनामा की प्रतियाँ उपलब्ध नहीं होने के कारण इन पर चर्चा विस्तार से नहीं की गई। गुप्त जी द्वारा लगभग 22 महापुरूषों के जीवन चरित लिखे गए थे। जिनमें से 14 हिन्दी-उर्दू के विद्वान, 3 विदेशी चिंतक, 3 ऐतिहासिक शासक और 2 संत थे। इनमें से कुछ को श्रृद्धाजलियाँ दी गई है और कुछ के संस्मरण लिखे गए है। मुस्लिम रचनाकारों, अकबर जैसे शासक और शाइस्ता खाँ जैसे नवाब का चरित चित्रण लिख कर गुप्त जी ने अपनी असंप्रदायिक दृष्टिकोण का परिचय दिया है। विदेशी चिंतकों जैसे हरबर्ट स्पेन्सर और मैक्समूलर का महत्व बताकर आधुनिक दृष्टिकोण का परिचय दिया है।